Bhartiya Shodh Patrika
Volume-1, Issue-2 Quarterly (October 2020 to December 2020) ISSN- 2582-6824

महात्मा गांधी और मानवतावाद

श्रीमती पूनम दत्ता,
सह आचार्य, राजनीति विज्ञान,
राजकीय महाविद्यालय, श्रीकरनपुर
ईमेल– poonamdatta9@gmail.com

चन्द्र प्रकाश
शोधार्थी
ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चुरू

वर्तमान युग भले ही आधुनिकता की चकाचौंध से भरा–पूरा हो, सम्पूर्ण जीवन–पद्धति आर्थिकता के आधार पर सृजित हो, बुद्धि का प्राबल्य हो, विज्ञान की चकाचौंध हो लेकिन फिर भी आज हम सत्य की अनुगामिक विचारधारा के अभाव में हम अनास्था, कुण्ठा और तनाव के शिकार बनते चले जा रहे हैं। वर्तमान में हम ऐसे दुर्दम, भयानक वातावरण में सशक्ति रूप से पोषित हो रहे हैं, जहां वामपंथी विचारधारा का इतना प्रभाव बन गया है कि हमने उसे जीवन तत्त्व मानते हुए भीतर नसों में घोल लिया है। ऐसी सभ्यता का निर्माण किया है, जहाँ स्वार्थों की क्षुद्रता, व्यक्ति–लाभ–चिन्तन और विरोध का विस्फोट सरलता से दृष्टव्य है। ऐसे दुःसह और विपरीत वातावरण में हमें जीवन जीने की राह सुझाती है– गांधी चिन्तन धारा। आज भले ही गांधीजी के व्यक्तिगत जीवन को लेकर या उनकी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में विरोध के ऊँचे स्वर उभर आये हों परन्तु विरोधों की बीच उनका आदर्श रूप, मूल्यवादी दृष्टि, नैतिक जीवन और व्यक्तित्व युग–सन्दर्भ में प्रासंगिक और आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य बन गया है। गांधी जी के प्रत्येक विचार तथा चिन्तन में मानवतावाद अन्तर्निहित है। उनके सकारात्मक व्यवहार के प्रत्येक पहलु में मानवतावाद की झलक देखी जा सकती है। इसी मानवतावादी चिन्तन की भूमि पर उन्होंने अपने नैतिक दर्शन का निर्माण किया।

मानवतावाद मानव मूल्यों और चिन्ताओं पर ध्यान केन्द्रित करने वाला अध्ययन, दर्शन या अभ्यास का एक दृष्टिकोण है। मानवतावाद का मूल आधार मानव है। मानवतावादी मानव कल्याण या सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए कार्य करता है। मानवतावाद सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम का सच्चा प्रतीक है। मानवतावाद सत्य को प्रतिस्थापित करता है। यह मानव में निहित सत्य को उजागर करता है। शिवम् के रूप में मानवतावाद से अभिप्राय उस नैतिक प्रत्यय से है जो पारलौकिक सत्ता के स्थान पर लौकिक सत्ता पर विश्वास करती है। सुन्दरम के रूप में मानव व्यवहार में प्रेम और सहिष्णुता का भाव पैदा करता है। संक्षेप में मानवीय उच्चतर मूल्यों को मानवतावाद कहा जाता है।

गांधी जी के सन्दर्भ में यदि ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाये तो आधारभूत रूप से एक महत्त्वपूर्ण तथ्य दृष्टिगोचर होता है कि वे मूल रूप में मानवतावादी ही थे।

महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण

महात्मा गांधी के सम्पूर्ण दर्शन में मानव सर्वोच्च स्थान प्राप्त किए हुए है। उनके शब्दों में "मानव ही सर्वोच्च विचार है", "मेरे लिए मानव ही सबसे प्रथम है।" चाहे क्षेत्र आध्यात्मिक हो या सामाजिक, राजनीतिक हो या आर्थिक, राष्ट्रीय हो या अन्तर्राष्ट्रीय उनके लिए केन्द्र बिन्दु मानव ही है। गांधी जी मानव सेवा द्वारा ही ईश्वर प्राप्ति, आध्यात्मिक शुद्धता की प्राप्ति या मोक्ष की प्राप्ति करना चाहते हैं। वे मानव क्रिया के अतिरिक्त किसी धर्म को स्वीकार नहीं करते। गांधी मुनष्य की नैसर्गिक अच्छाई में विश्वास करने वाले चिन्तक है। उनके मत में प्रत्येक मानव में इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह अपने अन्तर्निहित सत्य को पहचाने और अपने पूर्व नैतिक स्वरूप को प्राप्त कर सके। गांधी जी कहते हैं, 'मुझे विश्वास है कि मानव का समस्त पुरषार्थ उसके उपकर्ष के लिए नहीं बल्कि उत्कर्षक के लिए है।

1. सत्य और अहिंसा

गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को आधार बनाकर समाज के नवनिर्माण की परिकल्पना की। उनका शस्त्र 'सत्य' था, वह उन्हें जिस किसी रूप में प्रेरित करता गया, वे उस और आस्थावन एवं दृढ़ निश्चयी होकर अग्रसर होते गए। उनका सम्पूर्ण जीवन सत्य से अभिभूत था। वे अंतिम रूप से सत्य को सर्वोपरि मानते हुए सत्य के पथ पर चले और सत्य में ही समाहित हो गए। गांधी जी के मत में सत्यपरायण व्यक्ति मन, वचन और आचरण तीनों से सत्य के प्रति समर्पित रहेगा और सत्यपरायण व्यक्ति स्वार्थ, लोभ, भय और अहंकार से मुक्त होकर दूसरों के प्रति पूरे आदर का भाव रखते हुए, किसी भी अन्याय के विरुद्ध पूरी तरह संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर रहेगा। गांधीजी के अनुसार सत्य की प्राप्ति के लिए अहिंसा अनिवार्य साधन है जिसमें अपने विरोधी को प्रेम से जीता जाता है, घृणा या लड़ाई से नहीं। समकालीन परिस्थितियों में अहिंसा का महत्त्व और भी बढ़ गया है। गांधीजी के अनुयायी एवं अमरीकी अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग के शब्दों में– "आज के अत्यन्त विनाशकारी अस्त्रों के युग में हमारे सामने दो ही रास्ते हैं– या तो हम अहिंसा को अपना लें या फिर अपने अस्तित्व को ही मिटा दें।

वस्तुतः उनका सम्पूर्ण दर्शन सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत मूल्यों पर आधारित है। इन्हीं मूल्यों का प्रयोग उन्होंने दक्षिण अफ्रीका एवं भारतीय राजनीति रूपी प्रयोगशाला में किया। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि महात्मा गांधी के मानवतावादी दृष्टिकोण का अपना एक विशेष महत्त्व है। निःसन्देह गांधी जी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण

विरासत अहिंसा के प्रति उनका आग्रह है, जिसे आज भी अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को निपटाने के लिए सभ्य तरीके के रूप में लगातार महत्त्व प्रदान किया जा रहा है।

2. मानवमात्र की समानता

महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है। उन्होंने मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमताओं के पूर्ण विकास के लिए समानता को शाश्वत मूल्य के रूप में स्वीकार किया है। गांधी जी प्रत्येक मनुष्य की चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, वर्ण, रंग का हो, समानता के पक्षधर हैं। गांधी जी वर्ण व्यवस्था के समर्थक होते हुए भी विभिन्न वर्णों के बीच ऊँच–नीच की भावना का स्वीकार नहीं करते। उनकी मान्यता है कि शरीर की भाँति ही समाज को भी सुचारू रूप से चलाने के लिए श्रम विभाजन और विभिन्न अवयवों में पारस्परिक सहयोग चाहिए। शिक्षा, रक्षा, कृषि, वाणिज्य तथा सेवा– इन सब कार्यों को समान रूप से कर्त्तव्य समझ कर करना चाहिए। गांधी जी मानते हैं कि इन सब कार्यों का समाज में समान प्रतिष्ठा है। अतः इस आधार पर किसी जाति विशेष को कोई विशेष अधिकार या सुविधा देने की बात गलत है।

महात्मा गाँधी के विचारधारा से अस्पृश्यता मानवतावाद की स्थापना में मुख्य बाधक है। उनके मत में अस्पृश्यता का कोई शास्त्र सम्मत आधार नहीं है। उनके शब्दों में "अस्पृश्यता जीवित रहे, इसकी तुलना में मैं यह अधिक पसन्द करूंगा कि हिन्दू धर्म मर जाए, जितना भी जोर देकर मैं कह सकता हूँ उतना जोर देकर मैं कह रहा हूँ कि यदि इस वस्तु का विरोध करने वाला केवल मैं ही अकेला व्यक्ति होऊं तो भी मैं अपनी जान की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करूँगा।"

महात्मा गांधी का कहना है कि "चूंकि सब उसी एक अठिन के स्फुलिंग है, अतः कोई भी अस्पृश्य के रूप में पैदा नहीं हो सकता। मानव प्राणियों को जन्म से ही अस्पृश्य मानना गलत है।" गांधी जी के प्रयास से ही स्वतन्त्र भारत के नवीन संविधान में अस्पृश्यता–निवारण से सम्बन्धित समुचित व्यवस्था की गई।

3. धन का समाज के विकास के लिए उचित वितरण

आर्थिकता के परिप्रेक्ष्य में गांधी जी के विचार मानवतावाद के नजदीक थे। उनका आर्थिक चिन्तन साम्यवाद का संस्करण नहीं था, वरन वे साम्यवाद की समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के विरुद्ध आवश्यकताओं को संयत करने व उचित उपभोग पर बल देते हैं। वे शरीर–श्रम की महत्ता के प्रतिपादक हैं जिसका उत्पादन–परिणाम वर्गहीन समाज का निर्माण कर सकता है। इसलिए वे धन का समाज के विकास के लिए उचित वितरण पर बल देते हैं।

गांधीजी के ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त मानव मस्तिष्क द्वारा उत्पन्न समस्त अर्थ–प्रणालियों में एक ऐसा सिद्धान्त है जिससे मानव का शोषण रोका जा सकता है।

ट्रस्टीशिप में उनका अकाट्य विश्वास है। इस आधार पर वे यह नहीं चाहते कि पूंजीपतियों की उपेक्षा की जाये उन्हें बहिष्कृत किया जाये। उसके स्थान पर ट्रस्ट बना दिया जाये जिससे दोहरे लाभ विकसित होते हैं। पूंजीपति समाज से जुड़ता है और उसे विश्वास बना रहता है कि वह पूंजी का स्वामी भी है।

4. नारीत्व की गरिमा का समर्थन

महात्मा गांधी के विचारों में स्त्री–पुरुष का भेद मान्य नहीं। इसकी उन्होंने कटु आलोचना की तथा दोनों के मध्य समानता का पूरा प्रयास किया। उनका प्रयास है कि नारीत्व की गरिमा जो पतनोन्मुख समाज में लगातार अवनति की तरफ अग्रसर है की पुनर्प्रतिष्ठा की जाए। गांधी जी स्त्री–पुरुष दोनों को एक दूसरे का पूरक मानते हैं और इसी आधार पर दोनों के लिए समाज अवसर, समान अधिकार पर बल देते हैं। गांधी जी का मानना है कि स्त्रियाँ सार्वजनिक जीवन के उच्चतम स्थान पर जाने में भी समर्थ हैं। गांधी जी के अनुसार स्त्री पुरुष के परस्पर सहयोग के अभाव में दोनों का अस्तित्व असम्भव है। दोनों एक–दूसरे से उच्च या निम्न नहीं बल्कि समान व पूरक हैं।

महात्मा गांधी के मानवतावादी दृष्टिकोण में समाज में प्रचलित दुष्प्रथाओं का विरोध होता है। गांधी जी ने सती प्रथा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल–विवाह तथा देवदासी प्रथा की खुलकर आलोचना की। महात्मा गांधी के विचार में मनुष्य ने अन्तर्निहित क्षमताओं को उचित दिशा देने के लिए एवं आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु शिक्षा नितान्त आवश्यक है।

5. सेवा के प्रति समर्पण

महात्मा गांधी के विचार में प्रत्येक मनुष्य का परम आदर्श उसी अनन्त या परम् ब्रह्म को प्राप्त करना है जिसका वह एक अंश है। वे मानते हैं कि इस लक्ष्य की प्राप्ति अनन्त साधना, तपस्या और वैराग्य से सम्भव नहीं बल्कि उस परमात्मा के द्वारा रचित मानवों की सेवा द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। महात्मा गांधी स्वयं स्वीकार करते हैं, "मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हमें आत्मविश्वास, राष्ट्र को स्वाभिमान तथा दुःखी और दरिद्र लोगों के दुःखों को दूर करने की शक्ति प्रदान करे। यदि आप ईश्वर को ढूँढना चाहते हैं तो फिर मानव की सेवा करें।" ऐसा कहकर महात्मा गांधी ने प्रत्येक मनुष्य के लक्ष्य को पीड़ित मानवता से साथ बांध दिया। गांधी जी 'मानवीय धर्म' को सभी धर्मों से उच्च मानते थे।

6. सर्वोदय सिद्धान्त

महात्मा गांधी के मानवतावादी विचारधारा में सर्वोदय सिद्धान्त भी एक सशक्त अभिव्यक्ति है। गांधी जी के इस सिद्धान्त के तहत सभी का उदय अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के समग्र विकास पर बल देते हैं। गांधी जी के अनुसार जो कार्य एक व्यक्ति कर सकता है, उसे करने की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति में सन्निहित है। बस आवश्यकता केवल इसकी है कि उसकी अन्तर्निहित क्षमताओं के विकास का समुचित अवसर उसे प्राप्त होना चाहिए।

सर्वोदय साध्य है, सभी के कल्याण का मेरूदण्ड है। गांधी जी के अनुसार सर्वोदय का अर्थ व्यक्ति का भौतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास है। अतः गांधी का यह सिद्धान्त मानव–सापेक्ष है। उन्होंने विभेदीकरण एवं स्तरीकरण समाज का विरोध किया है। उनके मत में प्रत्येक व्यक्ति का स्तर समान होना चाहिए। उनका मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य का मुनष्य के रूप में विकास का समर्थक है।

संदर्भ :–

1. डॉ. धीरेन्द्र मोहन दत्त, महात्मा गांधी का दर्शन
2. यंग इण्डिया, 12 नवम्बर, 1961
3. तदैद, पृष्ठ संख्या 49–50 से उद्धत
4. डॉ. मोहसिन खान, महात्मा गांधी मूलतः मानवतावादी थे
5. अभिभाषणः चिली विश्वविद्यालय 'गांधी फॉर द यंग' विषय पर भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द का सम्बोधन
6. डॉ. पी.के. चड्डा, भारतीय राजनीतिक विचारक